पूज्य लालचंदभाई के प्रवचन
राग वास्तव में कहाँ होता है
हिंमतनगर, प्रवचन LA४८०

संदर्भ - श्री समयसार गाथा ९२-९३ तथा ३३२-३४४ टीका का अंतिम अनुच्छेद

****

इसलिये, ज्ञायक भाव सामान्य अपेक्षासे ज्ञानस्वभावसे अवस्थित होने पर भी, कर्मसेउत्पन्न मिथ्यात्वादि भावोंके ज्ञानके समय, अनादिकालसे ज्ञेय और ज्ञानके भेदविज्ञानसे शून्य होनेसे, परको आत्माके रूपमें जानता हुआ वह (ज्ञायकभाव) विशेष अपेक्षासे अज्ञानरूप ज्ञानपरिणामको करता है (–अज्ञानरूप ऐसा जो ज्ञानका परिणमन उसको करता है) इसलिये,उसके कर्तृत्वको स्वीकार करना (अर्थात् ऐसा स्वीकार करना कि वह कर्त्ता है) वह भी तब तक की जब तक भेदविज्ञानके प्रारम्भसे ज्ञेय और ज्ञानके भेदविज्ञानसे पूर्ण (अर्थात् भेदविज्ञान सहित) होनेके कारण आत्माको ही आत्माके रूपमें जानता हुआ वह (ज्ञायकभाव), विशेष अपेक्षासे भी ज्ञानरूप ही ज्ञानपरिणामसे परिणमित होता हुआ (–ज्ञानरूप ऐसा जो ज्ञानकापरिणमन उसरूप ही परिणमित होता हुआ), मात्र ज्ञातृत्वके कारण साक्षात् अकर्ता हो।

****

प्रवचन

उसकी शोध करनी है। उनकी शोध करते हुए आचार्य भगवान फरमाते हैं कि वास्तव में अनादि से द्रव्यकर्म में ही राग का अनुभाग होता है। जैसे खट्टे-मीठे का स्वाद नोकर्म का है, ऐसे राग-द्वेष-सुख-दुःख ये द्रव्यकर्म का स्वाद है, ये द्रव्यकर्म का परिणाम है, ये वहाँ (द्रव्यकर्म में) ही होता है। वहाँ होता है और आत्मा की पर्याय में ज्ञान होता है। यह एक वस्तु की स्थिति है, बस!

मुमुक्षु: स्थिति है। बराबर।

पू. लालचंदभाई: यहाँ ज्ञान होता है क्योंकि ज्ञान उपयोग का लक्षण है, और वह उपयोग अनादि-अनंत स्वच्छ है। अज्ञानी भले ही हो तो भी उसका उपयोग मलिन नहीं हुआ, वह तो स्वच्छ है। जैसे दर्पण में प्रतिभास होता है ऐसे इस स्वच्छ उपयोग में पुद्गल का अनुभाग यहाँ जानने में आता है।

मुमुक्षु: कर्मकृत मिथ्यात्वादि भावों को जानते समय।

पू. लालचंदभाई: जानते समय ये यहाँ जानने में आता है। (राग) होता है कर्म में - जड़ में, यहाँ (आत्मा में) होता है ज्ञान उपयोग। उसका (राग का) यहाँ (ज्ञान में) प्रतिभास देखकर कि यह जैसे मेरे में राग हुआ - ऐसी भ्रांति खड़ी की; इसलिए यहाँ पर्याय में मिथ्यात्व आ गया। मिथ्यात्व वहाँ (द्रव्यकर्म

में) था। मिथ्यात्व यहाँ (आत्मा की पर्याय में) भी नहीं था और आत्मा में (द्रव्य में) भी नहीं था। आत्मा की पर्याय में भी नहीं था और आत्मा में - द्रव्य में भी नहीं है। द्रव्य से शुद्ध और पर्याय से स्वच्छ - स्थिति यह।

मुमुक्षु: हाँ, स्थिति है यह।

पू. लालचंदभाई: अब मिथ्यात्व का - द्रव्यकर्म का अनुभाग दिखा, वहाँ स्वभाव को भूल गया कि मैं ज्ञाता हूँ; सहज ज्ञाता अवस्था का त्याग करता है।

मुमुक्षु: अवस्था का त्याग करता है।

पू. लालचंदभाई: अवस्था का त्याग किया, द्रव्य का नहीं।

मुमुक्षु: नहीं, इसलिए अवस्था में जैसे राग हो गया हो ऐसा उसे भासित हुआ।

पू. लालचंदभाई: उसे भासित हुआ, वह ज्ञान का त्याग किया। होता है ज्ञान, लेकिन ज्ञान का त्याग करके मेरे में राग होता है, ऐसी उसे भ्रांति हुई। अब यहाँ राग होता है, तो वहाँ (द्रव्यकर्म में) राग होता है।

मुमुक्षु: यहाँ पर्याय में भासित होता है।

पू. लालचंदभाई: भासता है राग।

मुमुक्षु: तो द्रव्यकर्म में...

पू. लालचंदभाई: (तो द्रव्यकर्म में) राग होता है। अब आगे बढ़ो अंदर में। अब राग पर्याय में होता है कि राग द्रव्य में है? आगे बढ़ो। द्रव्य स्वभाव तो परम पारिणामिक भाव से शुद्ध है अनादि-अनंत, फिर भी उसमें (द्रव्य स्वभाव में) राग है ऐसा मानता है तहाँ तक पर्याय में राग है।

मुमुक्षु: द्रव्य में राग माने तहाँ तक पर्याय में राग होता है।

पू. लालचंदभाई: पर्याय में राग है। ये तीन प्रकार की स्थिति का वर्णन हो गया।

अब उसका अभाव कैसे हो? सुल्टी बात। यह उल्टी हो गई, यह भूल थी। अब ज्ञानी गुरु मिले कि - तुम तो ज्ञायक हो, तुम शुद्ध हो, तेरे में राग होता ही नहीं, अवकाश नहीं, भावकर्म की उत्पत्ति होने का अवकाश नहीं। ऐसी बात जहाँ सुनी, कि आहाहा! मेरे में ज्ञान होता है। मेरे में ज्ञान होता है, वहाँ पर्याय में ज्ञान हो गया, तो पर्याय में राग नहीं है। तो पर्याय में राग नहीं तो द्रव्यकर्म में भी राग नहीं। यहाँ स्वभाव को देखा, मेरे में राग नहीं है। नहीं, तो यहाँ (पर्याय में) भी नहीं है।

मुमुक्षु: यहाँ नहीं तो फिर वहाँ नहीं है।

पू. लालचंदभाई: यहाँ (पर्याय में) नहीं तो वहाँ (द्रव्यकर्म में) नहीं है। एक जगह पर नहीं तो दो जगह पर नहीं हो जाएगा। एक जगह पर नहीं तो दो जगह पर नहीं होगा। पर्याय में भी नहीं, और सामान्य वर्गणा हो गया, दर्शनमोह खत्म हो गया। द्रव्यकर्म का अभाव हुआ, निर्जरा हो गई। द्रव्यकर्म की निर्जरा हुई, द्रव्यकर्म का क्षय हो गया - दर्शन मोह का। यहाँ (आत्म द्रव्य में) नहीं तो दो जगह पर नहीं। और यहाँ है तो दोनों जगह पर है।

मुमुक्षु: तो तो दोनों हैं। यहाँ है तो सभी जगह है, यहाँ नहीं तो फिर कहीं नहीं।

पू. लालचंदभाई: अच्छा विचार आया था तुम्हें कल शाम को।

मुमुक्षु: हाँ, बहुत अच्छा। दृष्टांत कैसे याद आया? आहाहा!

पू. लालचंदभाई: दृष्टांत याद आ गया ... मोटर में।

मुमुक्षु: जैसे राग द्रव्यकर्म में होता है, यहाँ पर्याय में नहीं होता, लेकिन उसे ऐसा भासित होता है कि मेरी पर्याय में होता है तहाँ तक द्रव्यकर्म में रहता है।

पू. लालचंदभाई: रहता है ये राग निमित्तरूप से (द्रव्यकर्म में)। नैमित्तिक है, नैमित्तिक का उत्पाद है तहाँ तक निमित्त है। अब ये नैमित्तिक कहाँ तक उपजता है? कहाँ तक उपजता है? कि आत्मा में होता है ऐसा मानता है तहाँ तक नैमित्तिक - अशुद्ध पर्याय प्रगट हुई। लेकिन आत्मा में नहीं तो पर्याय में भी नहीं।

मुमुक्षु: पर्याय में नहीं।

पू. लालचंदभाई: पर्याय में नहीं तो? मुमुक्षु: तो निमित्त में भी नहीं। दो जगह पर भूल होती है। दो जगह पर भूल होती है। पहले मूल में (राग) द्रव्यकर्म में था।

पू. लालचंदभाई: हाँ, उसके बदले .....

मुमुक्षु: लेकिन भेदज्ञान नहीं किया उसने, तो पर्याय में हुआ, फिर पर्याय में हुआ तो उसने ऐसा माना कि द्रव्य में हुआ तो पर्याय में चालू रहा।

पू. लालचंदभाई: चालू हुआ।

मुमुक्षु: फिर यहाँ नहीं ऐसा माने तो फिर पर्याय में रहता नहीं और द्रव्यकर्म में भी रहता नहीं। अर्थात् दो जगह पर भेदज्ञान करना था।

पू. लालचंदभाई: सम्यग्दर्शन हो गया, बाद में पर्याय में मिथ्यात्व नहीं तो द्रव्य में मिथ्यात्व नहीं। इसलिए मूल तो यहाँ से है। पहले वहाँ भूल की है। पहले वहाँ भूल की है, पहले। पहला कदम यह है, हों! पहला कदम ये है। भ्रांति का पहला कारण ये है।

मुमुक्षु: ये जानते समय, जानते समय भूल जाता है कि मेरे में राग होता है कि ज्ञान होता है?

पू. लालचंदभाई: हाँ! ये भूल जाता है। पहली स्टेज में दो पर्याय के बीच एकता की, दो पर्याय के बीच। और फिर पर्याय और द्रव्य के बीच एकता हो गई। जैसे ये लिया है न, कि सहज ज्ञप्तिक्रिया स्वभावभूत है, और यह करोतिक्रिया है हिंसा आदि की, उसके गर्भ में। इन दो के बीच भेदज्ञान नहीं लिया, इन दो पर्यायों के बीच का। ऐसे यह दो पर्यायों के बीच की एकता हो गई; द्रव्यकर्म का राग और यहाँ ज्ञान होता है, एकता हो गई।

मुमुक्षु: अर्थात् दो द्रव्य की एकता हो गई।

पू. लालचंदभाई: हाँ, दो द्रव्य की एकता।

मुमुक्षु: और यहाँ द्रव्य-पर्याय की एकता।

पू. लालचंदभाई: एकता हो गई।

मुमुक्षु: उसमें से बच गया तो इसमें...

पू. लालचंदभाई: लेकिन यहाँ ज्ञान होता है और वहाँ राग होता है तो फिर आत्मा में राग होता है ये आया नहीं न! आत्मा में तो ज्ञान होता है ऐसा लिया न, राग तो वहाँ होता है, रागी तो पुद्गल है।

मुमुक्षु: राग के पीछे ज्ञान का ... ज्ञान तो प्रगट हो गया।

पू. लालचंदभाई: हाँ।

मुमुक्षु: राग वहाँ होता है, यहाँ ज्ञान होता है।

पू. लालचंदभाई: हाँ, यह तो उसने वहाँ स्थाप दिया है इसलिए हमने यहाँ से विस्थाप दिया। पहली स्टेज में भूलता है। चौथा भेद कहता हूँ न, ये चौथा भेद। उसके ज्ञान के समय - कर्मकृत मिथ्यात्वादि भावों के ज्ञान के समय।

मुमुक्षु: भूल में भूल ही दृष्टांत हो गया। पहले नंबर की भूल दृष्टांत हो गया। दूसरे नंबर की भूल सिद्धांत हो गया।

पू. लालचंदभाई: सिद्धांत हो गया। ये ही बात, ये और ये ही बात को आप स्फटिकमणि और फूल के साथ उसका मिलान करो, देखो मिलान होगा देखो, घटाओ आप बेन। इस ही बात को तीन स्टेज में आप फूल और स्फटिकमणि दो पदार्थ हैं, अब उसमें आप घटा दो। किस प्रकार घटाओगे? घट जाएगा अभी!

मुमुक्षु: लाल तो फूल है। लालिमा तो फूल की है।

पू. लालचंदभाई: प्रथम से ही?

मुमुक्षु: प्रथम से ही।

पू. लालचंदभाई: कि दो जगह पर लाल है?

मुमुक्षु: नहीं नहीं, लाल एक ही जगह पर है - फूल ही लाल है और स्फटिक लाल नहीं।

पू. लालचंदभाई: अच्छा, ऐसे (पास में) बैठ थोड़ा। हाँ, एक ही जगह पर लाल है। कहाँ?

मुमुक्षु: फूल, फूल में लालिमा है।

पू. लालचंदभाई: अच्छा!

मुमुक्षु: यहाँ तो लाल झलकता है।

पू. लालचंदभाई: किसमें?

मुमुक्षु: यहाँ स्वच्छता में, स्फटिक की स्वच्छता है उसमें प्रतिभास होता है।

पू. लालचंदभाई: स्वच्छता है वह द्रव्य है, गुण है कि पर्याय?

मुमुक्षु: स्वच्छता पर्याय है।

पू. लालचंदभाई: पर्याय। अच्छा! पर्याय में झलकता है।

मुमुक्षु: स्फटिक द्रव्य है।

पू. लालचंदभाई: हाँ।

मुमुक्षु: स्फटिक द्रव्य है और स्वच्छता है वह पर्याय है। तो पर्याय में लालिमा झलकती है।

पू. लालचंदभाई: अच्छा?

मुमुक्षु: झलकती है तो (भी) वह आती नहीं।

पू. लालचंदभाई: नहीं?

मुमुक्षु: लालिमा वहाँ रहकर यहाँ प्रतिभासित होती है।

पू. लालचंदभाई: अच्छा!

मुमुक्षु: मात्र प्रतिभासित होती है।

पू. लालचंदभाई: तो फिर आगे बढ़ो।

मुमुक्षु: वह (स्फटिक की स्वच्छता) भूल जाता है (और मानता है) कि स्फटिक लाल है, पर्याय में लाल है।

पू. लालचंदभाई: यह पर्याय लाल हो गई (ऐसा मानता है)- वह भूल हो गई।

मुमुक्षु: वह पहले नंबर की भूल यह हुई।

पू. लालचंदभाई: हाँ, पहले नंबर की भूल। फिर?

मुमुक्षु: फिर दूसरे नंबर की भूल यह हुई कि स्फटिक लाल है।

पू. लालचंदभाई: कि स्फटिक लाल है।

मुमुक्षु: कि स्फटिक लाल है।

पू. लालचंदभाई: बस! वह भूल हुई उसकी।

मुमुक्षु: दूसरे नंबर की भूल यह है।

दूसरा मुमुक्षु: पास हो गया।

पू. लालचंदभाई: मुझे तो विश्वास था, मुझे तो विश्वास था इसलिए तो मैंने पूछा था। स्पष्ट है एकदम बात।

मुमुक्षु: स्पष्ट है एकदम। वास्तव में उसे फूल लाल दिखाई दे (तो) वह स्फटिक का स्वच्छपना हाथ में आ गया। सब तरह से हों! सारा स्फटिक।

पू. लालचंदभाई: हाँ, उसे फूल ही लाल भासना चाहिए। बस!

मुमुक्षु: उसे फूल ही लाल भासना चाहिए। सारा स्फटिक स्वच्छ दिखे।

पू. लालचंदभाई: हाँ, सारा। पूरा द्रव्य-गुण-पर्याय से सहित, कारण और कार्य दोनों।

मुमुक्षु: दोनों शुद्ध दिखें उसे। द्रव्य और पर्याय दोनों शुद्ध दिखें। आपने बहुत सरल और स्पष्ट कर दिया है। एकदम! बहुत स्पष्ट, चोखा।

पू. लालचंदभाई: लेकिन भ्रांति ही थी न? भ्रांति। स्फटिकमणि लाल कहाँ हुआ है?

मुमुक्षु: भ्रांति ही थी। कहाँ से होती? फूल अपनी लालिमा को छोड़ता नहीं और स्फटिक में प्रवेश करता नहीं।

पू. लालचंदभाई: (प्रवेश) करता नहीं।

मुमुक्षु: कहाँ से स्फटिक लाल हो जाये? स्फटिक अपनी स्वच्छता को छोड़ता नहीं।

पू. लालचंदभाई: छोड़ता नहीं, हाँ! दृष्टि बदली, बस! दूसरा कुछ उसने फेरफार नहीं किया।

मुमुक्षु: दूसरा कोई फेरफार नहीं किया।

पू. लालचंदभाई: फूल फूल की जगह पर रहा, स्वच्छता स्वच्छता की जगह पर रही, उसका प्रतिभास भले हो तो भी स्फटिकमणि शुद्ध ही है, लाल नहीं होगा। बस ऐसा भान हो जाता है। फूल हटाने की जरूरत नहीं।

मुमुक्षु: फूल हटाने की कहाँ, फूल तो फूल में है न?

पू. लालचंदभाई: फूल में लालिमा है, यहाँ कहाँ आया?

मुमुक्षु: दृष्टि हटा लेनी है।

पू. लालचंदभाई: फूल के ऊपर दृष्टि है उसके ऊपर से स्फटिक ऊपर आनी चाहिए।

मुमुक्षु: भाई, फूल ऊपर दृष्टि है इसलिए उसे स्फटिक लाल दिखता है।

पू. लालचंदभाई: बस!

मुमुक्षु: फूल पर से दृष्टि को हटा ले, तुझे स्फटिक स्वच्छ दिखेगा! दृष्टि है फूल पर और देखता है स्फटिक को, इसलिए स्फटिक लाल दिखता है।

पू. लालचंदभाई: हाँ! लेकिन निमित्त पर से लक्ष छूट जाए, और उपादान पर ऐसे देखे स्फटिक को तो?

मुमुक्षु: तो तो ज्ञान प्रगट हो गया उसे।

पू. लालचंदभाई: ज्ञान प्रगट हो गया।

मुमुक्षु: बहुत सरस! नयी बात आई आज।

पू. लालचंदभाई: हाँ! स्फटिकमणि की पर्याय लाल हुई ही नहीं। (हुई है) ये तो भ्रांति है। (लाल) अपरिक्षक को लगता है।

मुमुक्षु: भ्रांति है, अपरिक्षक को लगता है।

पू. लालचंदभाई: हाँ। उसी वक्त परीक्षक कहता है स्फटिकमणि स्वच्छ है, दोनों का वाद-विवाद होता है। वह कहता है कि तुम्हारी बात एक अपेक्षा से सच्ची है कि स्वभाव से स्वच्छ है, मैं कहता हूँ कि पर्याय में लाल हुई है। वह (परीक्षक) कहता है कि पर्याय भी स्वच्छ है, पर्याय में लाल नहीं। परीक्षक कहता है कि स्फटिकमणि तो लाल नहीं, उसकी पर्याय भी स्वच्छ है तो ही उसकी कीमत है!

मुमुक्षु: हाँ! तो ही उसकी कीमत है।

पू. लालचंदभाई: हाँ!

मुमुक्षु: स्वच्छता से उसकी कीमत है।

पू. लालचंदभाई: (स्वच्छता से) उसकी कीमत है। ये कोई लालिमा वहाँ घुस नहीं गई। आहाहा! (लालिमा घुस जाती) तो तो कौड़ी की कीमत हो गई उसकी।

मुमुक्षु: तो तो कौड़ी की कीमत हो गई, लाल शीशा हो जाता है न!

पू. लालचंदभाई: हाँ, शीशा हो जाता है, शीशा।

मुमुक्षु: शीशे की कीमत नहीं होती।

पू. लालचंदभाई: शीशे की कीमत नहीं होती, स्फटिक की होती है।

मुमुक्षु: भाई! ये बात बहुत कीमती है, हों! ऐसे तो यह आत्मा अनंत शुद्ध शक्तिमय ज्ञायक है।

पू. लालचंदभाई: है ही।

मुमुक्षु: यदि परिणमता है तो ज्ञानरूप से परिणमता है।

पू. लालचंदभाई: हाँ! उसमें ज्ञान होता है। उसमें राग अनादि से होता ही नहीं।

मुमुक्षु: होता ही नहीं।

पू. लालचंदभाई: रागरूप से परिणमता ही नहीं।

मुमुक्षु: रागरूप से परिणमता ही नहीं। रागादि मिथ्यात्वादि तो पुद्गल - द्रव्यकर्म में हैं।

पू. लालचंदभाई: परिणमते हैं।

मुमुक्षु: भाई, बहुत अच्छा। दो बात उसमें आ गईं।

पू. लालचंदभाई: हाँ, दो बात आयीं। इसलिए रागी तो पुद्गल है ऐसा कहा न, भेदज्ञान हुआ इसलिए। क्या हुआ भेदज्ञान में?

मुमुक्षु: रागी तो पुद्गल है।

पू. लालचंदभाई: पर्याय में राग है ऐसा नहीं।

मुमुक्षु: नहीं, रागी तो पुद्गल है।

ॐ